शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

हिंदी में अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी : कुछ प्रश्न

पुष्पेन्द्र दुबे

हिंदी के वैश्विक धरातल पर स्थापित होने के बाद उच्च शिक्षण संस्थानों में अनेक विषयों पर शोध संगोष्ठियां आयोजित होने लगी हैं। यह हिंदी भाषा और साहित्य के लिए शुभ संकेत है। आज के युग में वैश्विक चिंतन से स्वयं को जोड़ना सबसे बड़ी चुनौती है। विश्व साहित्य का प्रवाह किस ओर जा रहा है, इसका कुछ विवेचन हिन्दी की कविता, कहानी, उपन्यास और अन्य विधाओं में दिखाई दे रहा है। आज विश्व में जिन मूल्यों को लेकर चिंता जाहिर के जा रही है, उसका प्रतिबिम्ब हिंदी साहित्य में भी दिखाई दे रहा है। वैश्वीकरण ने इस तथ्य को स्थापित किया है कि समष्टि के प्रति करुणा भाव रखे बिना मनुष्य सभ्यता का टिकना कठिन है। आज चारों और आतंक का लावा बहता दिखाई दे रहा है। एक ओर भोगवादी संस्कृति अपने चरम पर है तो दूसरी ओर हिंसा के तांडव से मनुष्य भयभीत है। दुनिया के विकसित कहे जाने वाले देश अज्ञात भय से पीड़ित हैं। धर्म और राजनीति के घालमेल ने अँधेरे को और अधिक गाढ़ा कर दिया है। पेशावर में हुए बाल संहार से लेकर चार्ली हेब्दो तक विस्तारित हिंसा के मूल में दुनिया में बढ़ती विषमता और असहनशीलता जिम्मेदार है। आज दुनिया के अनेक देशों में लोकतंत्र स्थापित हो गया है। इन देशों में लोक कल्याणकारी सरकारें काम कर रही हैं। विज्ञान ने भौतिक सुख सुविधाओं के साधन जुटाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी है। इसके बाद भी मनुष्य जिस शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की तलाश में आदिम युग से आज तक चला आया है, वह अभी कोसों दूर है। जब कभी इस धरती पर मनुष्यता खतरे में पडी, हमारे बीच ऐसे महापुरुष आये, जिनके त्याग और बलिदान से नया प्रकाश फैला। उनका अनुकरण कर मनुष्यता ने ऊँचाई का स्पर्श किया। उनके जाने के बाद श्रेष्ठ साहित्य ने मनुष्य की रक्षा की। ऐसे साहित्यकार समाज के यथार्थ चित्रण में नहीं रमे, बल्कि उन्होंने समाज प्रवाह का अवलोकन कर अपनी राह स्वयं बनाते हुए शाश्वत साहित्य का सृजन किया। आज के साहित्यकारों की सारी शक्ति वर्तमान परिस्थितियों के विश्लेषण और विवेचन में समाप्त हो रही है। उनसे मनुष्य सभ्यता को आगे बढ़ने कोई मदद नहीं मिल रही है। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में ऐसे साहित्य पर चर्चाएं तो खूब रही है, लेकिन वह लोगों का जीवन बदलने, उन्हें सांत्वना देने में बिलकुल निकम्मी साबित हो रही है। संगोष्ठियों का विषय रखा जा रहा है 'आज के सवाल और साहित्य' परन्तु उनमें सवालों से टकराने और उनका जवाब ढूंढने वाले मौजूद नहीं हैं। इस दुनिया में शांति का रास्ता साहित्य और विज्ञानं के समन्वय से होकर जाता है, लेकिन इस ओर न साहित्यकारों का ध्यान है और न ही वैज्ञानिकों का। आज दोनों को ही बाज़ारवादी संस्कृति ने ग्रस रखा है। जिस दिन साहित्यकार बाज़ारमुक्ति के लिए रचनात्मक कार्य का दमन थामेगा उस दिन नया सूर्योदय हुए बिना नहीं रहेगा। उसे तीसरी शक्ति की तलाश में प्राणपण से जुटना होगा। अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों की सार्थकता तभी सिद्ध होगी, जब दुनियाभर के विचारक आज की व्यवस्था से भिन्न चिंतन प्रस्तुत करें।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल